Q) हड़प्पा सभ्यता की नगर-नियोजन प्रणाली की सविस्तार विवेचना करें।

Ans.) हड़प्पा संस्कृति की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी नगर-नियोजन है। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की खुदाई में पूर्व तथा पश्चिम में दो टिले मिले हैं। पूर्वी टिले पर दुर्ग स्थित था और पश्चिमी टिले पर नगर। दुर्ग में संभवतः शासक वर्ग के लोग रहते थे। प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर ईंटों के मकानों वाला नगर बसा था जहाँ ~~सम्राट्~~ सामान्य लोग रहते थे। नगरों के दुर्ग ऊँची और चौड़ी प्राचीरों (सुरक्षादीवार) से घिरे थे। इनका निर्माण एक सुनिश्चित योजना के आधार पर किया गया था। हड़प्पा सभ्यता के नगर योजना की निम्न विशेषताएँ हैं।

i) सड़क व्यवस्था → मोहनजोदड़ो की प्रमुख विशेषता उसकी समतल एवं चौड़ी सड़के थी। यहाँ के मुख्य सड़क 9.15 मी० चौड़ी थी जिसे राजपथ कहा गया है। अन्य सड़कों की चौड़ाई 2.75 से 3.66m तक थी। जाल पद्धति के आधार पर नगर नियोजन होने के कारण सड़के एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी। गलियाँ भी खुली तथा चौड़ी थी। कूड़ा एकत्र करने के लिए कुछ-कुछ दूरी पर गड्ढे ~~खोद~~ खोदे जाते थे या कूड़ेदान रखे जाते थे। मोहनजोदड़ो के एक सड़क के दोनों किनारे पर चबूतरे के साक्ष्य मिले हैं।

ii) जल निकास प्रणाली → मोहनजोदड़ो के नगर नियोजन की एक प्रमुख विशेषता यहाँ की जल निकास प्रणाली थी। यहाँ के ज्यादातर घरों में निजी कुएँ और स्नानागार होते थे। भवन के कमरे, रसोई, स्नानागार, शौचालय का पानी भवन की छोटी-छोटी नालियों से निकलकर गली की नाली में आता था। गलि की नाली को सड़क की दोनों ओर से बनी पक्की नालियों से जोड़ा गया था और इन्हे पत्थरों अथवा शिलाओं द्वारा ढक दिया जाता था।

iii) स्नानागार → मोहनजोदड़ो का एक सार्वजनिक स्थल है। यहाँ के विशाल दुर्ग (54.86 X 33m) में स्थित विशाल स्नानागार। यह 39 फुट (11.88m) लंबा, 23 फुट (7.01m) चौड़ा, 8 फुट (2.44m) गहरा है। स्नानागार से जल के निकास की भी व्यवस्था थी एवं स्वच्छ पानी को एक कुएँ द्वारा स्नानागार में लाया जाता था।

iv) अन्नागार → मोहनजोदड़ो में ही 45.72 m लं० एवं 22.86m चौ० एक अन्नागार मिला है। हड़प्पा के दुर्ग में भी 12 धान्य कोठार खोजे गए है। ये दो कतारों में

6-6 की संख्या में हैं। ये धान्य कोठार ईंटों के चबूतरों पर हैं और प्रत्येक का आकार 15.23m × 6.09m है। अन्नागार में हवा जाने की व्यवस्था थी।

v) ईंट → हड़प्पा संस्कृति के भवनों में पकाई गई ईंटों का प्रयोग भी भवन नियोजन के एक अद्भुत व्यवस्था है। ईंटें चतुर्भुजाकार होती थीं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त सबसे बड़ी ईंट का 51.43 × 26.97 × 6.35 cm है।

Scanned with CamScanner